हुए; **यः**=जो; **प्रयाति**=जाता है; **त्यजन्**=त्यागकर; **देहम्**=कलेवर; **सः**=वह; **याति**=प्राप्त होता है; **परमाम् गतिम्**=परमगतिरूप मेरे लोक को।

अनुवाद

इस योगधारणा में स्थित होकर अक्षरब्रह्म पवित्र ओंकार के उच्चारण के साथ जो मेरा स्मरण करते हुए देह त्यागता है, वह निःसन्देह भगवद्धाम को प्राप्त होता है।।१३।।

तात्पर्य

स्पष्ट है कि ओम्, ब्रह्म तथा भगवान् श्रीकृष्ण में भेद नहीं है। **ओम्** श्रीकृष्ण का निर्विशेष नाद है, पर **हरे कृष्ण** नाद में ओम् का भी समावेश है। इस युग के लिए यह स्पष्ट विधान है कि जो **हरे कृष्ण** महामन्त्र का कीर्तन करते हुए देह त्यागता है, वह भगवद्धाम को प्रयाण करता है। कृष्णभक्त कृष्णलोक अथवा गोलोक-वृन्दावन में प्रवेश करते हैं, जबकि निर्विशेषवादी ब्रह्मज्योति में ही स्थित हो जाते हैं। साकारवादी यथाधिकार परव्योम के वैकुण्ठ नामक असंख्य लोकों में भी प्रवेश करते हैं।

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः।।१४।।

अनन्यचेताः=अनन्य मन से; **सततम्**=नित्य; **यः**=जो' कोई' भी; **माम्**=मेरा (कृष्ण का); **स्मरति**=स्मरण करता है; **नित्यशः**=सदा; **तस्य**=उसके लिए; **अहम्**=मैं; **सुलभः**=सुलभ हूँ; **पार्थ**=हे अर्जुन; **नित्य युक्तस्य**=निरन्तर मेरे में युक्त हुए; **योगिनः**=भक्त के (लिए)।

अनुवाद

जो नित्य-निरन्तर अनन्य भाव से मेरा स्मरण करता है, उस के लिए हे अर्जुन ! मैं सुलभ हूँ, क्योंकि वह नित्य मेरे भक्तियोग के परायण रहता है।।१४।।

तात्पर्य

इस श्लोक में अनन्य भगवद्भक्तों के भक्तियोग का प्रतिपादन है। पूर्ववर्ती श्लोकों में आर्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी एवं ज्ञानी—इन चार प्रकार के भक्तों का वर्णन किया जा चुका है। भवबन्धन से मुक्ति के लिए कर्मयोग, ज्ञानयोग, हठयोग आदि विविध पथों का भी विवरण हुआ। परन्तु यहाँ इन के सम्मिश्रण से रहित विशुद्ध भक्तियोग का वर्णन है। भक्तियोग में भक्तों को श्रीकृष्ण के अतिरिक्त अन्य कुछ भी अभीप्सित नहीं रहता। शुद्ध भक्त स्वर्गारोहण अथवा भवबन्धन से मुक्ति तक की इच्छा नहीं करते। शुद्ध भक्त सर्वथा निस्पृह होते हैं। 'चैतन्य चरितामृत' में शुद्ध भक्त को निष्काम' कहा है, जिसका अर्थ है कि उसमें निजेन्द्रियतृप्ति विषयक कामना की गन्ध भी नहीं होती। पूर्ण शान्ति एकमात्र उसी की सम्पत्ति है; उनकी नहीं, जो स्वार्थ के निमित्त से चेष्टा करते हैं। शुद्ध भक्त तो केवल भगवान् को प्रसन्न करना चाहता